मधुबन ओम् शान्ति अंक 243 अक्टूबर

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(13-09-12)

परमपवित्र परमप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा हर फरमान पर स्वयं को कुर्बान करने वाले, वफादार फरमानबरदार, संगमयुग की सर्वश्रेष्ठ भाग्यवान निमित्त टीचर्स बहिनें तथा तकदीरवान सितारे, देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद प्यार स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सब प्राण प्यारे अव्यक्त बापदादा की मधुर रमणीक शिक्षाओं से स्वयं को सजाते, सदा कम्बाइन्ड रूप को स्मृति में रख श्रेष्ठ कम्पनी और कम्पेनियन का अनुभव करते रूहानी मौज में होंगे! बापदादा के इशारे प्रमाण चारों ओर ज्वालामुखी योग तपस्या की बहुत अच्छी लहर चल रही है। यह डेढ मास का होमवर्क सभी को मिला हुआ है, संगठित रूप में रोज़ सवेरे शाम विशेष एक घण्टा सभी एक ही शुद्ध संकल्प में स्थित हो, लाइट माइट स्वरूप का अभ्यास कर रहे हैं। मधुबन में तपस्या की लहर के साथ बेहद सेवाओं की भी धूम मची हुई है, सितम्बर मास में एक के बाद एक बड़ी-बड़ी कान्फ्रेन्सेज़ हो रही हैं, जिसमें हजारों भाई बहिनें आते बहुत अच्छे अनुभव कर रहे हैं। फिर अक्टूबर से तो डबल विदेशी भाई बहिनों की रिमझिम मधुबन में रहेगी। सभी प्यारे अव्यक्त बापदादा से भी सम्मुख मिलन मनायेंगे। यह भी सारे कल्प में सिर्फ संगमयुग पर हम बच्चों को परमात्म सुख प्राप्त करने का महान भाग्य मिलता है। वतन में बैठ बाबा हम बच्चों की इतनी ऊंची पालना कर रहे हैं तो अब हम सबको मिलकर उस पालना का रिटर्न अपनी श्रेष्ठ एकरस स्थिति से देना है। रिवाइज कोर्स में भी बाबा ने विशेष इशारा दिया है कि बच्चे निंदा को स्तुति में, ग्लानि को गायन में, ठुकराने को सत्कार में, अपमान को स्व-अभिमान में, अपकार को उपकार में, माया के विघ्नों को बाप के लगन में मग्न होने का साधन समझ परिवर्तन करना, यही बाप समान विजयी रत्नों में आने का साधन है। तो अब अन्तिम समय की समीपता प्रमाण बीती को सेकण्ड में फुलस्टाप लगाए, अपने संकल्प, श्वांस, समय, सम्पत्ति और सर्व शक्तियों को सफल कर सफलतामूर्त बनना ही है। बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हो ना! अब तो समय अनुसार हम सबको सच्चाई और पवित्रता का अवतार बनना है। जैसे हमारे मात पिता गायन योग्य, सिमरण योग्य, पूज्यनीय योग्य बने हैं, हमें भी फालो फादर कर उनके समान बनना है। संगम पर हमें पूजा नहीं करानी है लेकिन दर्शनीय मूर्त जरूर बनना है इसके लिए एक सेकण्ड भी हम न अपने आपको भूलें, न बाप को भूलें, न ड्रामा को भूलें। भाग्यवान हैं जो चैतन्य में बाबा हमें टुक-टुक करके ऐसी मूर्ति बना रहा है। बोलो, बाबा की मीठी-मीठी शिक्षायें सुनते यह अनुभव होता है ना। अच्छा।

विशेष सेवाओं निमित्त फिर से दो सप्ताह के लिए लण्डन, आइसलैण्ड में सेवार्थ आना हुआ है। आइसलैण्ड में ''मानवता की शक्ति'' विषय पर एक परिचर्चा पांच संस्थाओं के सहयोग से वहाँ के मेयर ने आयोजित की है। अनेक वी.आई.पीज इस परिचर्चा में सम्मिलित हो रहे हैं। करनकरावनहार बाबा विश्व में अनेक सेवायें कराता स्वयं को स्वयं प्रत्यक्ष कर रहा है। अच्छा - देश विदेश के सभी बाबा के तीव्र पुरुषार्थी नूरे रत्नों को विशेष याद स्वीकार हो।

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

वफादार, फरमानबरदार बनो

1) बाप का मुख्य फरमान है निरन्तर याद में रहो और मन, वाणी, कर्म में प्योरिटी को धारण करो। जैसे औरों को भी सुनाते हो कि पवित्र बनो, योगी बनो। ऐसे आपके संकल्प में भी अपवित्रता वा अशुद्धता न हो – इसको कहते हैं सम्पूर्ण पवित्र। तो इतना वफादार और फरमानबरदार बनना है जो एक सेकेण्ड, एक संकल्प भी फरमान के सिवाए न चले, तब कहेंगे फरमानबरदार।

2) जो मनन या वर्णन करते हो वह स्वरूप बन अन्य आत्माओं को भी उस स्वरूप का अनुभव कराओ। ऐसे को कहते हैं सपूत और सबूत दिखाने वाले। सपूत बच्चे को वफादार और फरमानबरदार कहा जाता है। स्थूल में फरमान पालन करने की शक्ति भी सूक्ष्म के आधार पर होती है। निरन्तर फरमान पालन होता रहे तो शक्ति सम्पन्न बन जायेंगे।

3) सम्पूर्ण वफ़ादार वह है जिसके संकल्प वा स्वप्न में भी सिवाय बाप के और बाप के कर्त्तव्य वा बाप की महिमा, बाप के ज्ञान के और कुछ भी दिखाई न दे। एक बाप दूसरा न कोई। ऐसे वफादार, फरमानबरदार की प्रैक्टिकल चलन में सच्चाई और सफाई दिखाई देगी। अगर एक संग सदा बुद्धि की लगन है तो अनेक संग का रंग लग नहीं सकता।

4) सम्पूर्ण वफादार आत्मा का मुख्य गुण होता है, भले उसे अपनी जान देनी पड़े लेकिन वह उसकी परवाह किये बिना हर वस्तु की सम्भाल करेंगे। कोई भी चीज़ व्यर्थ नुकसान नहीं करेंगे। अगर संकल्प, समय, शब्द और कर्म इन चारों में से कोई को भी व्यर्थ गंवाते हो वा नुकसान के खाते में जाता है तो उसे सम्पूर्ण वफादार कैसे कहेंगे!

5) सदा हर संकल्प और कदम बाप के फरमान पर चलने वाले अन्य आत्माओं के अरमानों को खत्म कर सकते हैं। अगर अपने अन्दर भी पुरुषार्थ का, सफलता का अरमान रह जाता है तो इसका भी कारण कि कहाँ न कहाँ, कोई न कोई फरमान नहीं पालन होता है। तो जिस घड़ी भी अपने पुरुषार्थ के ऊपर वा सर्विस की सफलता के ऊपर वा सर्व के स्नेह और सहयोग की प्राप्ति के ऊपर जरा भी कमी वा उलझन आये तो चेक करो कि कौनसे फरमान की कमी है जिसका प्रत्यक्ष फल एक सेकेण्ड के लिए भी अनुभव कर रहे हैं!

6) फरमान सिर्फ मुख्य बातों का नहीं, फरमान हर समय के हर कर्म के लिए मिला हुआ है। सवेरे अमृतवेले से लेकर रात तक अपनी दिनचर्या में जो फरमान मिले हुए हैं, उनको चेक करो। वृत्ति को, दृष्टि को, संकल्प को, स्मृति को, सर्विस को, सम्बन्ध को सभी को चेक करो। अगर हर एक्ट फरमान अनुसार है तो कोई अरमान रह नहीं सकता।

7) जैसे सीता को लकीर के अन्दर बैठने का फरमान था। ऐसे अपने को हर कदम उठाते हुए, हर संकल्प करते हुए बाप के फरमान की लकीर के अन्दर समझो। जब संकल्प में भी फरमान की लकीर से निकलते हो तब व्यर्थ बातें वार करती हैं। तो सदैव फरमान की लकीर के अन्दर रहो तो सदा सेफ रहेंगे। कोई भी प्रकार के रावण के संस्कार वार नहीं करेंगे। तो न वार होगा न बार-बार समय व्यर्थ जायेगा इसलिए हर फरमान को सदा याद रखो।

8) फरमान है स्वमान में स्थित रहो। स्व को भूलकर अगर मान की इच्छा रखते हो तो फरमान उल्लघंन होता है। इस एक शब्द की गलती होने से अनेक गलतियां हो जाती हैं। फिर मान में आकर बोलना, चलना, करना सभी बदल जाता है। सिर्फ एक शब्द कट होने से जो वास्तविक स्टेज है उससे कट हो जाते हो।

9) फरमान उल्लंघन करने के कारण न स्वयं सन्तुष्ट रहते, न दूसरों को सन्तुष्ट कर पाते, इसलिए कभी भी अपनी उन्नति का जो प्रयत्न करते हो वा सर्विस का कोई भी प्लैन बनाकर प्रैक्टिकल में लाते हो, तो प्लैन बनाने और प्रैक्टिकल में लाने समय भी पहले अपने स्वमान की स्थिति में स्थित हो फिर कोई भी प्लैन बनाओ और प्रैक्टिकल में लाओ। स्थिति को छोड़कर प्लैन नहीं बनाओ।

10) बाप का फरमान है कि मुख से सिवाए ज्ञान रत्नों के और कोई एक शब्द भी व्यर्थ नहीं निकलना चाहिए। वायुमण्डल का वर्णन करना, यह भी व्यर्थ हुआ ना। जहाँ व्यर्थ है वहाँ समर्थ की स्मृति नहीं। समर्थ की स्मृति में रहते हुए कोई भी बोल बोलेंगे तो व्यर्थ नहीं बोलेंगे, ज्ञान रत्न ही बोलेंगे। तो वृत्ति को, बोल को भी चेक करो। कई ऐसे भी समझते हैं कि कर्म कर लिया, पश्चाताप कर लिया, माफी मांग ली, छुट्टी हो गई। लेकिन

नहीं, कितनी भी कोई माफी ले लेवे लेकिन जो कोई पाप कर्म वा व्यर्थ कर्म भी हुआ तो उसका निशान मिटता नहीं, निशान पड़ ही जाता है। रजिस्टर साफ स्वच्छ नहीं होता।

11) अब तक मैजॉरिटी पहले पाठ अर्थात् पहली बात पवित्र दृष्टि और भाई-भाई की वृत्ति में फेल हैं। अब तक इस पहले फरमान पर चलने वाले फरमानबरदार बहुत थोड़े हैं। बार-बार इस फरमान का उल्लंघन करने के कारण अपने ऊपर बोझ उठाते रहते हैं। इसका कारण यह है कि पवित्रता की मुख्य सब्जेक्ट का महत्व नहीं जानते हैं, उसके नुकसान की नॉलेज को नहीं जानते।

12) बाप का फरमान है कि सोते समय सदा अपनी बुद्धि को क्लीयर करो, चाहे अच्छा, चाहे बुरा, सब बाप के हवाले करो और अपने बुद्धि को खाली करो। दे दिया बाप को फिर बाप के साथ सो जाओ, अकेले नहीं। अकेले सोते हो तभी स्वप्न आते हैं। अगर बाप के साथ सोओ तो कभी ऐसे स्वप्न भी नहीं आ सकते।

13) बाप का फरमान है जिससे आपका कोई कनेक्शन नहीं है, सिर्फ दिलचश्प समाचार है, उसे सुनते भी नहीं सुनो। जिसमें आप कर कुछ नहीं सकते, सिर्फ सुन लिया तो वह समाचार बुद्धि में तो गया, टाइम वेस्ट तो हुआ? और बाप की श्रीमत में परमत मिक्स कर दी क्योंकि बाप की आज्ञा है – सुनते हुए नहीं सुनो।

14) बाप का फरमान है कि समय की समीपता प्रमाण अब सेवा की रफ्तार को तीव्र करो। ड्रामा की भावी और बाप की शुभ आशा यही है कि सेकण्ड-सेकण्ड, श्वांसों-श्वांस याद और सेवा के लगन में रहो। अब अनेक कारणों को समाप्त कर निवारण मूर्त बन विश्व की स्टेज पर स्थित हो ज़ीरो और हीरो पार्ट बजाओ। अब आलस्य, अलबेलापन, नाजुक संस्कारों को छोड़ शिव शक्ति रूप बन बाप के श्रीमत रूपी हाथ में हाथ दे और सदा साथी बन साथ दे कार्य की रफ्तार को बढ़ाना ही है।

15) बापदादा का फरमान है कि सदा हर आत्मा के प्रति रहमदिल, कृपालू, दयालू, मास्टर दुःख हर्ता, सुख कर्ता बन उड़ते रहो और उड़ाते रहो। अपने हर संकल्प, बोल और कर्म की जिम्मेवारी करनकरावनहार बाप को दे दो। बापदादा आपको निमित्त करनहार बनाये आपका वर्तमान और भविष्य सहज और श्रेष्ठ बनाके ही रहेंगे। मैं-पन को छोड़ बाप के हवाले कर दो तो बापदादा का वायदा है सब बच्चों का सर्व बोझ समाप्त कर डबल लाईट बना ही देंगे।

शिवबाबा याद है ? 04-09-11 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"पुरुषार्थ की गहराई में जाना है तो बुद्धि को साफ, शुद्ध, ठण्डा और स्वच्छ रखो"

(दादी जानकी)

अब घर जाना है, यह याद कर रहे हो या याद की यात्रा से घर के पास नज़दीक बैठे हो? दीदी का यह गीत फेवरेट था - अब घर जाना है...। ऐसे नहीं कहती थी तैयारी करना है, सदैव तैयार रहती थी। घर में रहना माना बाबा के साथ रहना। बिन्दु रूप बाबा याद नहीं पड़ सकता है, घर तो बड़ा है, उसे तो याद कर सकते हैं ना। घर को याद नहीं किया जाता है, बाकी अपना घर अच्छा लगता है। मधुबन अपना घर है, दूसरे के घर में मेहमान बनकर रहेंगे और अपने घर में मालिक हो करके रहते हैं। अपना घर सो बाप का घर, बाप का घर सो अपना घर। तो बाबा को याद नहीं करना पड़े, घर में बैठे हैं ना। सब समेटके हल्के हो करके, कोई बोझा नहीं, कोई कर्मबन्धन नहीं, कोई हिसाब-किताब नहीं बिल्कुल कर्मातीत बन करके घर जाने के लिये तैयार बैठे हैं। घर जाके फिर वापस तो यहाँ नहीं आना है, ऊपर घर में जाके फिर बुद्धि में है सतयुग में आना है, यह हमको पहले से ही बता दिया है, यह ड्रामा का प्लान है।

समर्पण हो करके अपनी जीवन में मन, वाणी, कर्म को ऐसा सफल किया जो उसने प्रैक्टिकल लाइफ से जैसा बाप वैसा बच्चा, वैसे सपूत बन करके सबूत देने की सूक्ष्म यही भावना हो तो और कोई बातें याद नहीं आयेंगी। सपूत बनने में

ही प्रैक्टिकल सैम्पुल बन जाते हैं। जो आज्ञाकारी सपूत बच्चा है वो बाप के दिल पर चढ़ जाता है। उस बच्चे के दिल में यह होता है कि मेरा बाप कैसा है, वैसा ही मैं भी रहूँ इसलिये आज्ञाकारी बनने में उनको बड़ा मज़ा आता है। बाबा का आज्ञाकारी बच्चा कभी कोई अवज्ञा नहीं करेगा, वो बड़ा खबरदार रहता है। उसके अन्दर सदा यही रहता है कि मुझ आत्मा से कोई अवज्ञा न हो। थोड़ी भी अवज्ञा एक बारी हुई तो सिरमाथे पर, प्रभू की आज्ञा पर चलने की जो भावना थी, उसका जो फल मिलता है उससे वंचित हो जायेंगे इसलिए बुद्धि को बड़ा ही क्लीन रखना होता है। जितना बुद्धि को साफ, शुद्ध, ठण्डा रखेंगे उतना पुरुषार्थ की गहराई में जायेंगे।

बाबा कहते मैं भक्ति का फल देने आया हूँ, तो जिनमें पूरा परिवर्तन नहीं दिखाई देता माना उसने पूरी भक्ति नहीं की है। आहार, विहार, विचार सब बदली हो गया माना भक्ति का फल मिला। भक्ति का फल मिला माना डायरेक्ट भगवान मिला जिसको इसकी खुशी, शक्ति आयी वही गोप गोपी बन जाते हैं। ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी नाम तो पीछे पड़ा। हैद्राबाद से कराची रात को 2 बजे भी उठ करके भाग जाते थे, सचमुच क्या लगन थी उस समय! देह के बन्धनों, सम्बन्धों से एकदम छुटकारा, जरा भी नाम निशान नहीं दिखाई पड़ता था कि यह कोई इसकी माँ है, यह इसके बच्चे हैं। दोनों में परिवर्तन प्रैक्टिकल देखते थे (जैसे आलराउण्डर दादी और गुल्जार दादी)। ज्ञान की गहराई में जायेंगे तभी ऐसा परिवर्तन का पुरुषार्थ हो सकता है। तो भगवान ने हमारी इन कर्मेन्द्रियों द्वारा अच्छे कर्म करना सिखलाया है, सब सफल करना सिखाया है। तो इतना सिम्पल, स्वच्छ रह करके सच्ची दिल से रह करके जैसे बाप वैसे बच्चे बनें, तब बाबा कहेगा बाप में आप, आप में बाप।

सेवा कितनी भी करो, कई बहुत बिजी दिखाई पड़ते हैं, टू मच सेवा में व्यस्त हैं। नहीं, यह तो भाग्य है। बाबा ने इतना योग्य बना करके, अपने यज्ञ में बिठा करके, दाल रोटी खिला करके सेवा का, याद का भाग्य और ईश्वरीय परिवार के स्नेह का भाग्य जमा करने का चांस दिया है। कोई मेरे से नाराज़ हो तो बताओ मैं माफी मांगती हूँ। सब राज़ी है ना, तो बाबा भी राज़ी हो जायेगा। अगर परिवार में कोई मेरे से नाराज होगा तो बाबा क्या कहेगा? बाबा को यह थोड़ेही कहेंगे कि यह थोड़ा ऐसे है ना इसलिए... ना ना। अपनी मन्सा अच्छी है तो सब अच्छा हो जाता है। ब्रह्माकुमार/ब्रह्माकुमारियाँ वैराइटी हैं, भिन्न-भिन्न हैं लेकिन गोप-गोपियों में एक ही बाबा से प्यार, मुरली से प्यार, अतीन्द्रिय सुख में रहना और एक दो को देख करके अति खुश रहना, इसलिए दिन भर में कितनी भी सेवा करो लेकिन शाम को यहाँ इकट्ठे हो करके रूहरूहान करो तो अच्छा लगता है। सारा दिन सेवा में ध्यान रखने से परिवार द्वारा जो सुख मिलता है इससे बहुत खुशी होती है। आपस में एक दो का केयर करना फिर शेयर करना, यह भी बाबा ने सिखाया है।

तो हम सब पहले जिसकी भक्ति करते थे वो कौन है, कैसा है, उसके नाम, रूप, देश, काल को नहीं जानते थे। अभी जाना है कि परमात्मा कौन है, कहाँ है...वैसे अपने को भी जाना है, कि आत्मा मस्तकमणि मस्तक में चमक रही है। जैसे खाना खाने के बाद हज़म हुआ तो चेहरे से लगेगा खाया है। ऐसे भी नहीं कि कल खाया तो आज नहीं खायेंगे, नहीं, रोज़ ताज़ा भोजन चाहिए। तो भगवान भी मुफ्तलाल कम्पनी नहीं है जो हमको ऐसे ही मुफ्त में खुशी दे देगा, नहीं। खुशी देता तो बहुत अथाह है, जो सदा ही नाचते रहो, पर वो जो कहता है वो करते भी रहो। सदा सच्चे रहेंगे तो अन्दर में सच्ची याद होगी फिर बाबा भी खुश, मैं भी खुश, सारा जहान भी खुश।

6-9-11

"कोई भी कारण बताकर अपसेट होना माना अपना भाग्य गंवाना"

(दादी जानकी)

संगमयुग पर संगमयुग की महिमा करें, बाबा की महिमा करें या भाग्य की महिमा करें! बाबा कहते जो बाप की महिमा है वो बच्चों की महिमा हो जाये। हम उसके तख्तनशीन बच्चे हैं तो उसके योग्य होना चाहिए ना, इसीलिए बाबा ने हमको अपना बनाया है। दिन-रात, सुबह-शाम बाबा ही हमको चला रहा है क्योंकि बाबा के सिवाए हम चल नहीं सकते हैं, ऐसे

फील होता है।

जितनी बाबा के यज्ञ में दिल से जो भी सेवा कर रहे हैं, वो प्रेम से कर रहे हैं, याद भी प्यार से कर रहे हैं। बाबा को प्रेम से याद तब करेंगे जब आपस में प्रेम होगा। अगर मेरा आपसे प्रेम नहीं है तो मैं बाबा को प्यार से याद करती होंगी, यह सोचने की बात है। कण्डीशन है ना, सबूत है ना। मेरा बाबा से प्यार है, प्रैक्टिकल प्रुफ क्या? याद नहीं करते हैं, प्यार है, उसका प्रैक्टिकल रूप क्या है? संगमयुग की घड़ियां बहुत वैल्युबूल हैं, यज्ञ सेवा सारे कल्प में फिर से नहीं मिलेगी। अभी याद और सेवा संस्कारों में चली गयी है, इसलिए याद और सेवा की खैंच होती है। संगठन में बैठना खैंच होती है। पुरुषार्थ करने के लिए बाबा हमको ड्रामा अनुसार अभी कई प्रकार से सैलवेशन देता है। पहले तो यह सब बातें कहाँ थी, अब तो आराम से बैठे हो। इतनी सुख-सुविधायें होते हुए भी हमारी याद और सेवा की आदत नेचुरल (स्वाभाविक) हो गई है? यह चेक करो।

बाबा विश्व की बादशाही देता है, पर उसके संस्कार यहाँ बनते हैं। विश्व की राजाई के संस्कार यहाँ बनते हैं। साकार में धरती पर रहने वाले ब्रह्मा बाबा ने सूर्य चांद के भी पार रहने वाले शिवबाबा को साथी बनाया। वहाँ वाला यहाँ वाले को हुक्म किया और यहाँ वाले ने किया। भगवान बड़ा या भाग्य बड़ा? भगवान कैसे भाग्य बनाता है, वह जानने वाले बड़े या भाग्य बनाने वाले बड़े! मैं कौन हूँ? भाग्यवान हूँ, पद्मापद्म भाग्यवान हूँ क्योंकि बाबा के पास जन्म लेने से ही पढ़ाई शुरू हो जाती है। सेवा करते करते भी हमारे कर्म अच्छे हो गये हैं, यह भी भाग्य है। सेवा कर्म द्वारा करने से भाग्य बन गया है। जितना पढ़ाई से प्यार है उतनी कमाई है, उतना खुश रहते हैं। सेवा में भाग्य है। हम बाबा के बनने से क्या बने हैं, बाबा ने कैसा बनाया है। बनाने वाले का भी गायन तभी है जब हम बाबा को समर्पण हुए हैं सम्पन्न बनने के लिये। बाबा की हम बच्चों प्रति जो भावना है, जो शिक्षा है वो हम ही पूरा करेंगे। अगर कोई परिस्थिति को देख, कोई बहाना बना करके, कोई कारण बता करके थोड़ा भी अपसेट हुए माना अपना भाग्य गँवाया। तो कभी भी अपसेट नहीं होना, यह भी अपने आपको सम्भालके अपनी अच्छी स्थिति बनाओ। जो बाबा के सामने सदा प्रजेन्ट रहो, बाबा हमारे सामने प्रजेन्ट रहे, यह जैसे बाबा ने हम बच्चों को प्रेजेन्ट (गिफ्ट) दी है।

अभी क्या करना है, वो समझ बाबा दे रहा है इसलिए अभी समय नहीं गंवाना है तब ही समय सफल होगा। और कुछ नहीं समय को सफल करते जाओ तो जीवन आपेही सफल होती रहेगी, उसकी खुशी होगी। बाबा का डायरेक्शन है, अशरीरी बन बाप को याद करो। बाबा ब्रह्मा द्वारा श्रीमत दे रहा है, मनमत पर नहीं चलो। श्रीमत कहती है एवररेडी रहो तो पास विथ ऑनर में आना सम्भव है। ऐसा अपना रिकॉर्ड रखना है, स्थिति ऐसी हो जो बाबा भी कहे यह मेरा बच्चा पास विथ ऑनर में आने वाला है, परिवार भी कहे यह तो आयेगा क्योंकि यह कोई भी बात में दिलशिकस्त नहीं होता है, जो कभी निराश वा नाराज़ नहीं होता है। भले रावण राज्य में रहते लेकिन रावण के चिन्ह भी न हों तब कहेंगे पास विथ ऑनर, सच्चे पुरुषार्थ की लाइफ में रहने वाले। साथ में जाने के लिये ना कोई अपना, ना कोई अपनी, हम हैं हर समय न्यारा बनके प्यारा बनने वाले। अच्छा – ओम् शान्ति।

9-5-12

"लगन में मगन होना ही योग है, योग माना बाबा से सकाश लेना, शक्तियाँ लेना" (दादी गुल्जार)

अभी सबको कौन याद था? मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा क्योंकि मेरा बाबा ही तो सबके दिल में है ना। तो बाबा को हम सभी ने अपने दिल में पक्का समाया है ना कि कभी-कभी निकल जाता है! जो प्यारी चीज़ होती है वो कभी याद से निकल नहीं सकती है। दिल की याद से वो दूर हो ही नहीं सकती। याद करना नहीं पड़ता है लेकिन याद आता ही है। तो बाबा को अगर कोई भूल भी जाता है तो बाबा कोई न कोई कारण से याद दिला देता है। लेकिन हमारा तो बाबा से वायदा है हम बाबा के दिल में हैं और बाबा हमारे दिल में है तो दिल की बात भूलती कम है। और हम तो योगी जीवन वाले हैं।

योग लगाने वाले तो एकाध घण्टा लगायेंगे लेकिन हमारे दिल में बाबा है तो याद है ही है इसलिए हम निरंतर योगी हैं, योगी जीवन वाले हैं। तो जीवन तो सदा होती है तब तो सबके दिल से, प्यार से ''मेरा बाबा'' शब्द ही निकलता है। अभी हम सोल कॉन्सेस हैं तो आत्मा रूप में परमात्मा याद है ही है। अगर अपने को आत्मा निश्चय कर लें तो आत्मा के लिये है ही बाबा। तो आप सभी योगी जीवन वाले हो या योग लगाने वाले? कर्म भी करते हैं तो बाबा की दी हुई सौगात के स्थान पर हर कार्य में बाबा ही याद आता है।

हम कर्मयोगी हैं, सिर्फ योग के टाइम योग लगाने वाले नहीं, चलते-फिरते भी बाबा की याद है। योग माना लगन में मगन हैं। योग माना बाबा से सकाश लेना, शक्तियाँ लेना। योग का अर्थ ही अनेक जन्मों के पापों का नाश होना क्योंकि बाबा सर्वशक्तिवान है कोई एक विशेष शक्ति नहीं है, बाबा के पास तो सर्वशक्तियाँ हैं। योग माना याद। तो बाबा को याद करने से वो सकाश हमको बाबा से प्राप्त होती है। चाहे समाने की शक्ति चाहिए, चाहे निर्णय करने की शक्ति चाहिए, कोई भी शक्ति की आवश्यकता है तो सर्वशक्तिवान बाबा के याद की लगन में मगन हो करके अगर बाबा के आगे उन शक्तियों का संकल्प करते हैं तो वो शक्ति हमारे में बाबा द्वारा आ सकती है। यह सबका अनुभव है ना! जैसे कभी-कभी सहन करने की शक्ति कम होती है तो मन कहीं भटकता है। जैसे सूर्य को हम देखते हैं तो सूर्य से गर्मी वा सकाश जो चाहिए वो मिलती है। बाबा तो है ही दाता, हम सिर्फ उस ज्योति स्वरूप बाबा से ज्योति स्वरूप आत्मा बन करके मिलते हैं तो भिन्न-भिन्न अनुभव योग द्वारा होते हैं। जैसा जैसा आपके दिल का उमंग होगा और जैसा जैसा समय होगा वैसे वो उमंग संकल्प में रख करके अगर बाबा की याद में बैठते हैं, आज मुझे सन्तुष्ट करने की शक्ति चाहिए, आज मुझे प्यार चाहिए, तो जो भी आप मन से लवलीन हो करके संकल्प करेंगे वो मन का संकल्प बाबा पूरा करेगा।

बाबा परमधाम छोड़ करके हम बच्चों के लिये ही तो साकार में आया है। तो जो भी आपके संकल्प में कमी है वो बाबा पूरी कर देगा, अगर आप दृढ़ संकल्प करके बैठेंगे तो वो हो सकता है, पूरा होता है क्योंकि बाबा ही तो हमारे लिये सब कुछ है ना इसलिए जो भी चाहिए बाबा से ही मिलता है। यह जो पालना मिल रही है, वो बाबा की ही पालना है ना। बाबा की याद में बाबा का कार्य कर रहे हैं। तो इतना निरंतर याद है बाबा की! कोई भी काम करो बाबा, मेरा बाबा। होता है ऐसे, बाबा की याद या कभी-कभी काम में खिटखिट हो जाये तो भी बाबा याद होता है? लेकिन बाबा कहता है योगी जीवन वाले क्योंकि जीवन तो सदाकाल की होती है। हैं ही हम योगी जीवन वाले... ऐसे अनुभव होना चाहिए। दिल माने कि मेरा बाबा ऐसे बाबा कहना माना शक्तियाँ आना।

जैसे बाबा कहता है पॉवरफुल योग लगाओ तो बाबा की याद हमें भूले नहीं। जब कोई बात हो जाती है तो चेहरा बदल जाता है। बाबा तो देखता ही रहता है और बाबा की दिल से निकलता ही रहता है वाह बच्चे वाह! हमारे दिल से भी निकलता वाह बाबा वाह! इतना जिगरी प्यार होना चाहिए जो भूलना मुश्किल हो जाये।

हमारे इस एक जन्म के पुरुषार्थ का 21 जन्मों के साथ कनेक्शन है मानो यहाँ आप पुरुषार्थ ठण्डा करते हो तो 21 जन्म का कनेक्शन पीछे ही रहेंगे, राजधानी में नहीं रहेंगे। तो यहाँ का एक सेकेण्ड और एक संकल्प 21 जन्म से कनेक्शन है। यहाँ एक संकल्प गँवाया तो आपका 21 जन्म प्राप्ति में कम हो जायेगा इसलिए समय और संकल्प दोनों का अटेन्शन रखो। बाबा ने तो इस बारी कहा है कि कौन सा ज़ोन इसमें पास होके दिखायेगा वो बाबा देखेगा। बाबा ने कहा ऐसा कोई ज़ोन एक एक सेन्टर सहित निर्विघ्न हो। तो जहाँ जो रहता है वो वहाँ उस स्थान को निर्विघ्न बना दे तो सारा ज़ोन ही निर्विघ्न हो जायेगा। बाबा ने कहा अभी तक कहीं ऐसा कोई नाम नहीं आया है कि हमारा यह स्थान निर्विघ्न है। तो आपका वायब्रेशन औरों को भी जायेगा। तो पहले ओ. आर. सी. वाले निर्विघ्न बन जाओ। लगातार एक मास निर्विघ्न रहेंगे तो हम किसी को कह सकते हैं। ऐसे हो सकता है? तो रोज़ मुरली क्लास के बाद पूछेंगे कि सब निर्विघ्न हो? तो कमाल करो यह, फिर बाबा भी बहुत खुश होके वाह बच्चे वाह! का गीत गायेगा।

पॉवरफुल योग वही है जो कर्म करते कर्मयोगी रहें और जब खास विशेष बैठते हैं तो उस समय कोई न कोई शक्ति बाबा से लेके अपने में भरते जायें। कोई न कोई गलती होती है तो कोई न कोई शक्ति की कमी होती है इसलिए अमृतवेले बाबा से शक्ति लेके और फिर सारा दिन उसको चेक करो, रात्रि को रिजल्ट सुनाओ बाबा को, कि बाबा आज जो शक्ति आपसे ली है, उसी प्रमाण ही मेरा आज का सारा दिन बीता। सर्वशक्तिवान बाबा से योग लगाने से हम मास्टर सर्वशक्तिवान बनते हैं लेकिन विशेष एक कोई भी शक्ति ध्यान में रखकरके फिर आप चेक करो कि आज जो भी मैंने बाबा से शक्ति ली, उस शक्ति ने काम किया यानि पुरुषार्थ में मदद मिली? और

बाबा से शक्ति के साथ प्यार भी मिलता है, सुख भी मिलता है, शान्ति भी मिलती है जो भी आपको चाहिए वो बाबा से योग द्वारा अपने में धारण कर सकते हो।

मन को बिजी रखने के लिये हर घण्टे चलते-फिरते भी ब्राह्मण, फरिश्ता सो देवता हूँ, यह सिर्फ हूँ नहीं लेकिन प्रैक्टिकली उन स्वरूपों का अनुभवी बन जाऊं, यह ड्रिल जरुर करो। मन से उन स्वरूपों की विशेषताओं के बारे में सोचेंगे, बार-बार वह ब्राह्मणों का रूप क्या होता है, कैसा होता है, फरिश्ते की लाइट माइट स्थिति, देवता यानि सर्व दिव्य गुणों सम्पन्न स्वरूप... इसमें मन बिजी रहने से मन कन्ट्रोल में रहेगा। ऐसे मन को बिजी रखने से मनजीत सो जगजीत बनेंगे। सिर्फ अटेन्शन रखो तो यह पुरुषार्थ हो सकता है, ऐसे नहीं भूल गया करके छोड़ नहीं देना। अच्छा भूल भी गये तो बाबा से क्षमा ले करके फिर से वो अभ्यास वो अनुभव करना शुरू कर दो। मतलब यह आदत डाल दो तो नेचुरल हो जायेगा। जैसे खाने की भूख नेचुरल लगती है उसके लिये कोई प्रोग्राम फिक्स नहीं करते फिर भी ऑटोमेटिक भूख लगती है ना, मुझे यह शरीर की आदत जैसे पड़ सकती है तो मन (ड्रिल) की क्यों नहीं पड़ सकती है। सब हो सकता है सिर्फ लक्ष्य हो मुझे करना ही है, यह हमारा संकल्प होना चाहिए तभी वो साकार हो सकेगा। करना है नहीं करना ही है। संगठन में तो और ही एक दो को देख करके अच्छा और जल्दी, ज्यादा हो सकता है। हाँ, कभी एक दो को देख करके हार्टफेल भी होते हैं और एक दो को देखके उमंग में भी आते हैं। दोनों बातें आयेंगी लेकिन बाबा कहते कुछ भी हो जाये, करना ही है इसमें, दृढ़ हैं तो हो ही जायेगा, कोई बड़ी बात नहीं लगेगी। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

अपनी धारणाओं को श्रेष्ठ बनाने की भिन्न-भिन्न युक्तियां

1) संगमयुग पर बाबा से हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस का वर्सा मिलता है। भक्ति में यह तीनों भगवान से मांगते थे, ज्ञान में यह अपने आप बाबा दे रहा है। भक्ति में जब तक सामने कोई मूर्ति नहीं, मंत्र नहीं तब तक याद नहीं कर सकते। ज्ञान मार्ग में न कोई मूर्ति, न मंत्र, न कोई माला.. ज्ञान मार्ग में समझ मिल गई। विवेक कहता है भक्ति में बहुत मेहनत है, बुद्धि भटकती है, धक्के खाती है। वहमी बन जाते हैं। करते हैं तो कुछ प्राप्ति नज़र नहीं आती, नहीं करते हैं तो डर लगता है, कुछ हो न जाये। बाबा ने ज्ञान देकर हमें निर्भय बना दिया है।

2) भक्ति के बंधनों से छुटकारा पाने में बहुत बहादुरी चाहिए। देह के सम्बन्धों से, दुनियावी पदार्थों से छुटकारा पाना बड़ी बात नहीं है, लेकिन भक्ति से छुटकारा पाना सहज नहीं है, यह ज्ञान नास्तिक के लिए सहज है, वह जल्दी समझ जायेगा लेकिन भक्त के लिए कठिन है। भक्ति में जो अल्पकाल की प्राप्ति है, उसमें वह फंसा रहता है। अब हमारी बुद्धि में भक्ति और ज्ञान का कान्ट्रास्ट है, इसलिए अब भटकने की जरूरत नहीं। फालतू पैसा खर्च करने की जरूरत नहीं। अब समझ आ गई कि एक बाबा को याद करना है, अपनी जीवन सफल करनी है।

3) कई पूछते हैं - हमारी धारणा श्रेष्ठ कैसे बनें? धारणा श्रेष्ठ तब बनेगी जब पहले बुद्धि क्लीयर हो। बुद्धि का भटकना छूटे। बुद्धि एकाग्र होकर परमात्मा बाप को याद करे तो धारणा श्रेष्ठ बने। एक धारणा होती है गुणों की, दूसरी धारणा होती है ज्ञान वा योग लगाने की। गुण धारण करने की धारणा अलग है, योगयुक्त होने के लिए धारणा अलग है। योगयुक्त रहने के लिए अशरीरी होकर बाबा से लिंक जोड़ने की लगन हो। इसके लिए चाहिए अन्तर्मुखता और एकान्त। जिसे योगयुक्त होकर रहने की लगन है वह कभी यह नहीं कह सकता कि एकान्त में रहने का टाइम नहीं मिलता है। उसकी रात में भी कई बार आंख खुल जायेगी। नींद ऐसी नहीं होगी जो सोया सो खोया। कोई फिर कहते नींद आती ही नहीं। योगी के यह चिन्ह नहीं है। ऐसे नहीं नींद आये तो बहुत आये, न आये तो आये ही नहीं। जो फालतू ख्याल करते हैं उन्हें नींद नहीं आती। जो फालतू ख्यालात से फ्री रहते हैं वह बाबा की याद में सो जायेंगे। जो बाबा की याद की गोली नहीं खाते, उन्हें नींद के लिए गोली लेनी पड़ती है। योग के टाइम नींद आयेगी, वैसे नींद के समय नींद नहीं आयेगी। हमारी नींद ऐसी हो जो गुडनाइट की और बाबा की गोद में चले गये फिर आंख खुलने का समय आये तो

अपने आप खुल जाए, दिल कहे उठकर बाबा को याद करूँ। जो उठते ही बाबा की याद में बैठता है, वह बाबा का प्यार पाता है। उस समय सुस्ती न आये। यदि सिर में दर्द भी होगा तो ठीक हो जायेगा।

4) जो अच्छी तरह प्यार से बाबा को याद करता है, बाबा उसे कहता - बच्चे मैं तुम्हारी माँ भी हूँ, प्रीतम भी हूँ... वह बहुत प्यार करता है। उस प्यार में उसी समय मन का दु:ख व शरीर का दर्द सब चला जायेगा। यह धारणा है। कोई-कोई कहते हैं मुझे खुशी का अनुभव नहीं होता। लेकिन अनुभव तब हो जब ज्ञान को धारण करो और औरों को दान करो। समय पर जो सेवा सामने आये, उसे दिल से, सच्चाई से, प्रेम से करो तो खुशी आयेगी। जो मजबूरी से काम करता उसे खुशी नहीं आती। जो काम दिल से करता, उसे खुशी आती है।

5) बाबा ने हम बच्चों को बता दिया है कि किसकी दबी रहेगी धूल में, किसकी राजा खाए कभी अचानक आग लग जाती है, भूकम्प आ जाता है .. तो क्यों न हम अपना सब सफल कर लें। सफल तभी होता है जब बाप के नाम से करते हैं, सफल करने से खुशी होती है। वह खुशी माइन्ड को हेल्दी बना देती है। मन हेल्दी तो तन भी हेल्दी हो जाता है। क्योंकि मन का तन से गहरा कनेक्शन है। हमारा मन सदा हेल्दी हैपी रहे। जो मन से खुश है वह कभी नहीं कहेगा कि मैं बहुत बीमार हूँ, या तकलीफ है। सदा खुश रहने की पहले धारण करनी है। ध्यान रखना है मैं एवर हैप्पी रहूँ। अन्दर से रहूँ किसको दिखाने के लिए न रहूँ बाबा का शुक्रिया मनाते, अपने भाग्य को देखते दिल सदा खुश रहे।

6) तुरन्त दान महापुण्य के महत्व को समझ खुश रहे। तुरन्त दान अर्थात् जो संकल्प आये कर लो, कल किसने देखा है। वैसे दान पुण्य कहा जाता है। दान यथाशक्ति दिया जाता, पुण्य जितना चाहे करो। समय पर हमदर्दी से किसको मदद करो तो उसके दिल से दुआ निकलेंगी। दान किया तो कुछ न कुछ जमा किया, बीज बोया। बाबा के यज्ञ में कभी यह शब्द नहीं आता कि डोनेशन लेते हैं। यज्ञ सेवा अर्थ बीज बो रहे हैं, यह कर्म की खेती है, सत्य धर्म की स्थापना का कार्य है, बीज बो रहे हैं। इसका फल न केवल मुझे मिलेगा बल्कि अन्य भी खायेंगे। जितना जो तन-मन-धन सफल करता है उतना खुशी में रहता है। मात-पिता भी हमें खुशी में नाचता हुआ देख खुश होते हैं। हमारी खुशी में सब खुश। दुनिया की आत्मायें जो हमें नहीं जानती वह भी सोचती हैं – यह इतना खुश कैसे रहते हैं। हमारी श्रेष्ठ धारणा खुशमिजाज़ बना देती है। दिमाग फालतू नहीं सोचता तो खुशमिजाज़ रह सकते हैं। बाबा को दिल से याद करने वाले को खुशी होती हैं क्योंकि वह विजयी बनता जाता है। उसका मन, कर्मेन्द्रियों पर कन्ट्रोल आ जाता है। जो इच्छा ममता के वश में हैं, कर्मेन्द्रियों के गुलाम हैं उसे खुशी नहीं हो सकती। जिसे कोई इच्छा न हो वह बहुत खुश है। जो संगठन में रहते गुणग्राही है वह खुश है। जरा भी निंदा करने वाला कभी खुश नहीं रह सकता। तो पहले हैपीनेस चाहिए फिर हेल्दी-वेल्दी रहेंगे। जिन बातों से खुशी गुम हो जाती है, वहाँ से रास्ता बन्द कर दो। जहाँ से खुशी आती है वह रास्ता खुला रखो। मेरी खुशी गुम क्यों होती है। चेक करना है - कोई गफलत है? बाबा ने जो इतना खजाना दिया है, वह कोई छीन न सके, इतना खबरदार केयरफुल रहना है। संगमयुग की यह खुशी सतयुगी राज्य का अधिकारी बना रही है।

7) सेवा ब्राह्मण जीवन की शोभा है। ब्राह्मण सेवा न करें तो देवता बन न सकें। सेवा तन-मन-धन को पावन बनाती है। जो तन-मन-धन से सेवा में लगता है वह सहज पावन बन जाता। नहीं तो हमारा तन-मन-धन सब पापी था, जो पावन नहीं बनता वह खुश नहीं रह सकता। अगर सोचते हैं कि यथाशक्ति करेंगे... सोचके देंगे, तो बाबा भी उसे सोच कर देता है। जिसे दिनरात यह चिंतन रहता कि करना है तो अब, कल किसने देखा वह खुश रहते हैं। जितना अभी तन से करो उतना तन्दरुस्त बनेंगे। मधुबन में भी देखो जो 10-10 हजार रोटी बनाते, सब्जियां कांटते उन्हे कितनी खुशी रहती है। कभी नहीं कहते रोटी बेलने से हाथ दर्द होने लगे हैं। फालतू सोचने से सिरदर्द होता है। सोच दर्द ले आता है। कुछ करने से दर्द चला जाता है। हेल्दी बनना हो तो फालतू मत सोचो। वेल्दी बनना हो तो बाबा गरीब निवाज है, पैसा नहीं है, दिल तो बहुत है ना। अन्दर से देने की दिल हो तो खुशी बढ़ेगी। खुशी सच्चाई से आती है। सेवा करो, सदा मीठा बोलो, औरों की दुआयें लेते चलो तो सदा खुश रहेंगे। रफ बोलने से खुशी गायब हो जाती है।

8) जो खुशी से पुरुषार्थ करते हैं वह उड़ते रहते हैं, भारी नहीं होते। जो समझते हैं मैं बाबा की गोद में बैठा हूँ, बाबा के कंधों पर बैठा हूँ, बाबा के सिर पर बैठा हूँ... उन्हें बहुत खुशी रहती। बाबा हमें अपना सिरमौर बनाता, डबल क्राउन देता है। जितना ऊंचा सोचो उतना ऊंचा बनेंगे। जितना फालतू सोचो उतना धारणा कम होती है। किसी को न देख बाबा ने जो खुशी का खजाना दिया है, जितना लूट सको लूटो और हेल्दी वेल्दी बन जाओ। अच्छा– ओम् शान्ति।